Dr. Vandana Suman
Associate Professor
Dept. of Philosophy
H. D. Jain College, Ara
M.A. Semester — III
Phil. CC—10
Contemporary Western Philosophy

1

Notes / Moore : Refutation of Idealism (प्रत्ययवाद का खण्डन)

GRB BOOKS

प्रत्ययवाद का खण्डन

मूर का महत्वपूर्ण स्थान है। उन्होंने प्रत्ययवाद का खंडन किया है। मूर के अनुसार प्रत्ययवाद की केन्द्रीय स्थापना यह है कि विश्व का स्वरूप प्रत्ययात्मक है। इस विषय में दो बातें स्पष्ट हैं—

1. विश्व का मूल रूप उसके व्यष्टिगत रूप से सर्वथा भिन्न है।

2. विश्व में ऐसे अनेक गुण विद्यमान हैं जिनका हमें प्रत्यक्ष भी नहीं होता संसार के स्वरूप को प्रत्ययात्मक कहने का तात्पर्य यह है कि प्रत्येक वस्तु में कुछ विशिष्ट गुण विद्यमान हैं जैसे विश्व चेतन है, बौद्धिक है, सोद्देश्य है और अचेतन नहीं है। अतः सामान्य दृष्टिकोण से प्रत्ययवाद का यह गहरा अंतर और प्रत्ययवाद द्वारा विश्व को अत्यन्त उत्कृष्ट गुणों से सजा देने का प्रयास इस प्रश्न को सहज ही सामने रखता है कि वास्तव में प्रत्ययवाद मान्य है अथवा नहीं।

मूर का कहना है कि वह इस बात का खंडन नहीं करते कि विश्व या परमसत् का स्वरूप प्रत्ययात्मक है वरन् वे प्रत्ययवादियों द्वारा दिये गये हेतुओं को अस्वीकार करते हैं जिन्हें वे अपने सिद्धान्त के प्रतिपादन हेतु अनिवार्य मानते हैं जिन्हें वे अपने सिद्धान्त

पास-बुक
EASY APPROACH TO GET SUCCESS

के प्रतिपादन हेतु अनिवार्य मानते हैं। अतः अगर मूर यह स्पष्ट कर दें कि तत्त्वमीमांसीय प्रत्ययवादी भी इसी विचारधारा को मानते हैं तो उनके द्वारा प्रत्ययवाद स्वतः निराकृत हो जाता है। उनका कहना है कि अगर आधारभूत तर्कवाक्य ही असिद्ध हो जाता है तो प्रत्ययवादियों के उपर्युक्त निष्कर्षों के प्रतिपादन का कोई औचित्य ही नहीं रह जाता। परन्तु साथ ही मूर यह भी कहते हैं कि यदि कोई बिना तर्क दिये ही विश्व के स्वरूप को प्रत्ययात्मक मानता है तो उसका मैं खण्डन कभी नहीं करूँगा। मूर के अनुसार एक तर्कवाक्य ऐसा है जो प्रत्ययवादियों के प्रतिपादन का, सर्वाधिक आवश्यक अंग है, और जिसे सभी प्रत्ययवादियों ने स्वीकार किया है। वह तर्कवाक्य है — 'सत्ता दृश्यता है।'

इस तर्कवाक्य का विश्लेषण प्रस्तुत करते हुए मूर इस बात को स्पष्ट करते हैं कि इस तर्कवाक्य के जितने भी संभाव्य अर्थ लिए जाते हैं, वे सभी अमान्य और अस्वीकार्य हैं।

सर्वप्रथम दृश्यता शब्द को लें जिसका सामान्य व मौलिक अर्थ होगा 'संवेदन'। परन्तु अध्यात्मवादियों के अनुसार दृश्यता का अर्थ मात्र संवेदन ही नहीं वरन संवेदन और विचार दोनों ही है।

Notes

GRB BOOKS

को कभी जाने [illegible] यह ही [illegible] द्रव्यता
वाला पहले की [illegible] [illegible] एक सही
मूल रूप नहीं होती [illegible] भी हमारा
है, शब्द के तीन [illegible] अर्थ लिए
जा सकते हैं

(1) सत्ता और द्रव्यता में पूर्ण
तादात्म्य है अर्थात दोनों शब्द एक
दूसरे के पर्यायवाची हैं। सत्ता शब्द
द्रव्यता के अतिरिक्त अन्य कोई
अर्थ नहीं रखता। अर्थात शब्दों में
दोनों एक ही वस्तु के दो विभिन्न
नाम हैं, परंतु ऐसा द्रव्यता है
तर्कवाक्य का मात्र इतना ही अर्थ
नहीं कि वह एक शब्द (सत्ता) की
परिभाषा है और यादि है भी
तो एक नितांत अनुचित परिभाषा है।

(2) दूसरे अर्थ में इस तर्क-
वाक्य का अर्थ होगा सत्ता का द्रव्यता
के साथ आंशिक तादात्म्य है। इस प्रकार
किसी वस्तु को सत् कहने का अर्थ
हुआ (अनुभूति + अन्य कुछ और)
अर्थात सत् के लिए अनुभूति
होना आवश्यक है परंतु वस्तु का
एवं अर्थ अनुभूति नहीं है। अतः
अस्तित्व के अर्थ में मात्र अनुभूति
नहीं है। अतः अस्तित्व के
अर्थ में मात्र अनुभूति के अतिरिक्त
कुछ और भी स्वीकार करना पड़ेगा
अर्थात किसी वस्तु का अनुभूति
का विषय होना ही उसके
अस्तित्व को प्रमाणित नहीं
करता। परंतु यह अर्थ भी

सुगम पास-बुक
AN EASY APPROACH TO GET SUCCESS

आध्यात्मवादियों को मान्य नहीं।

(3.) अंतिम (अर्थ) में एक नहीं संभावना होती है कि सत्ता को अपने अनुभव से भिन्न नहीं होता परन्तु किसी अन्य तत्व होता है और वह स्वयं है। परंतु 'र' और दुःखता में इतना अविभाज्य संबंध अवश्य है। परंतु मूर को यह अर्थ भी स्वीकार नहीं।

इस तर्कवाक्य को आवश्यक तो संश्लेषणात्मक होना चाहिए क्योंकि यह दो पदों के बीच एक आवश्यक संबंध का अभिव्यक्तिकरण है जिनके अर्थ भिन्न-भिन्न हैं। अतः इस तर्क-वाक्य को सत्य, वैध व मान्य तभी माना जा सकता है, जब वह स्वयं-सिद्ध हो। परंतु आध्यात्मवादियों का अपने तर्क-वाक्य को बुद्धि द्वारा पुष्टीकरण का प्रयास यह सिद्ध करता है कि यह तर्क-वाक्य स्वयं सिद्ध नहीं है क्योंकि स्वयं-सिद्ध तर्क-वाक्य अपने लिए बुद्धि द्वारा प्रमाणित होने की अपेक्षा रखता है।

'सत्ता दुःखता है', के इस तीसरे अर्थ में यह तर्क दिया जाता है कि 'अनुभूति' का विषय विषयी के बिना अकल्पनीय है, यह वाक्य अनिवार्य है, क्योंकि इसके विरोधी तर्कवाक्य की कल्पना नहीं

सुगम पास-बुक
AN EASY APPROACH TO GET SUCCESS

Note!

भी जा सकती । परन्तु जैसे ही तर्क वाक्य जिनके विधेय की उद्देश्य में की कल्पना की गई तो व्याघात है निर्बलेषणात्मक तर्क वाक्य कहलाते है। परन्तु ऐसा कुछ मत है, जो इसमें एक ही संश्लेषणात्मक सिद्ध किया गया सकता है। अतः आद्यात्मवादी की विश्लेषणी विशेषकों को सामने रखते है कि ये तर्क - वाक्य संश्लेषणात्मक होने के साथ - साथ अनिवार्य भी है।

आद्यात्मवादियों के अनुसार विषय और विषयी में आवश्यक संबंध है क्यों कि इनमें विभाजन नहीं दिखाई देता। इसके अतिरिक्त इनमें लिए पीले वर्ण व पीले वर्ण के संवेदन में भी कोई अन्तर नहीं है अर्थात संवेदन और संवेदन उत्पन्न करनेवाली वस्तु एक ही है। परन्तु ध्यान देने योग्य है कि यदि संवेदन व वस्तु में पूर्ण तादात्म्य है तो उस एकता के लिए तर्क प्रस्तुत करना मूर्खता है तथा इसके विपरीत यदि वे भिन्न है तो इनमें पूर्ण तादात्म्य घोषित करना हास्यास्पद है। इसके विरुद्ध आद्यात्मवादियों की ओर से तर्क संभावना प्रस्तुत करते हुए मूर का कहना है कि आद्यात्मवादी संवेदन व वस्तु के विभाजन को स्वीकार करते हुए भी दोनों को एक ही आंगिक एकता के अंग मानते है और

GRB BOOKS
पास-बुक
EASY APPROACH TO GET SUCCESS

GRB BOOKS

Notes 1

~~शब्दकार~~ भिन्न होते हुए भी वे तादात्म्य रखते हैं। परंतु मूर के अध्यात्मवादी तर्क मूर को स्वीकार्य नहीं हैं। उनके अनुसार इस प्रकार की विरोधी तर्क वाक्यों को एक साथ मान्यता देकर सिद्धान्त को कायम कर देना एक प्रकार का तार्किक दोष है जो मात्र अनुभव के आधार पर ही असिद्ध हो जाता है।

निष्कर्ष रूप में मूर कहते हैं कि जैसे ही यह प्रमाणित हो जाता है कि 'सत्ता' व 'दृश्यता' दो सर्वथा पृथक पद हैं यथा 'हरा' और 'मीठा' अतएव वे अनिवार्य रूप से संबद्ध नहीं हो सकते वैसे ही 'सत्ता दृश्यता है' तर्क वाक्य असिद्ध हो जाता है।

इसके पश्चात मूर कई प्रकार से इस बात को स्पष्ट करते हैं कि वस्तु का अस्तित्व हम सब की चेतना से पृथक है अर्थात वस्तु और उसका संवेदन दो सर्वथा पृथक बातें हैं। यह बात सर्व मान्य है कि नीलवर्ण का संवेदन हरितवर्ण के संवेदन से पर्याप्त भिन्न है। परंतु यह बात स्पष्ट है कि संवेदन होने के नाते दोनों में कोई गुण सामान्य है, जिसे (चेतना) कह सकते हैं और यदि दोनों में कोई अंतर है, तो वह उन पदार्थों के कारण है जिनके वे संवेदन हैं। अन्य

सुगम पास-बुक
AN EASY APPROACH TO GET SUCCESS

GRB BOOKS

4

~~से, मिलती भी अविवेकन~~
~~शब्द ही तरह है (1) चेतना क्योंकि~~
~~जो सभी संवेदन समान है तथा~~
~~कारण पदार्थ, क्योंकि कारण सभी वेदन~~
~~(2) एक दूसरे से भिन्न दृष्टिगत होते~~
~~हैं। अतः संवेदन व पदार्थ में~~
एकता या तादात्म्य स्थापित
करना बहुत बड़ी भूल है जो बहुधा
प्रत्ययवादी विचारक करते हैं। नीलवर्ण का
नीलवर्ण के संवेदन के साथ
तादात्म्य स्थापित करने का अर्थ है
एक यौगिक के पूर्णता के दो अंशों में
या एक अंश का उस पूर्ण के साथ
तादात्म्य स्थापित करना जिसका
वह अंश है और ऐसा करना नितांत
विवेकहीन ही है।

यहाँ प्रत्ययवादी यह
कह सकते हैं कि संवेदन व वस्तु में
तादात्म्य न होते हुए भी एक अविभाज्य
संबंध है क्योंकि पदार्थ संवेदन
की सामग्री है। मूर इसका प्रत्युत्तर
देते हुए कहते हैं कि ज्ञान को
विषय संवेदनों की प्रक्रिया में
सम्मिलित नहीं माना जा सकता।
नीलवर्ण नीले पुष्प में उसकी विशेषता
या गुण रूप में विद्यमान है परंतु यह
संबंध नील वर्ण और उसके संवेदन
के मध्य नहीं है। अर्थात नीलवर्ण और
उसके संवेदन के मध्य नहीं है।
अर्थात नीलवर्ण का संवेदन स्वयं
नीला नहीं है। अन्य शब्दों
में नीले पुष्प को प्रत्यक्षीकरण
करने में हमारे प्रत्यक्षीकरण

पास-बुक
APPROACH TO GET SUCCESS

GRB BOOKS
Notes

नीला नहीं हो जाता।

मूर पुनः कहते हैं कि एक अन्य संभावना भी नहीं की जा सकती है कि मस्तिष्क में मस्तिष्क के प्रभावित होने के कारण ही हमें इसका आभास होता है। मस्तिष्क में किसी भी वस्तु का प्रत्यक्ष होना और उस पदार्थ के अस्तित्व के बारे में ज्ञान होना समान बात नहीं है। अतः प्रथम मानसिक प्रत्यय और विचारों की सीमा का अतिक्रमण करने का कोई प्रश्न ही नहीं उठता है क्योंकि संवेदन देखा या अनुभूत होना ही हमें अपने विचारों से परे ले जाता है। संवेदन द्वारा प्राप्त किया हुआ ज्ञान वास्तव में हमारे अनुभव की प्रक्रिया का एक अंग नहीं है, वरन अन्य का ज्ञान है। और यह अन्य वस्तु है बाह्य पदार्थ, जो संवेदन उत्पन्न करने का कारण है। अतः ज्ञान का विषय स्वयं ज्ञान की प्रक्रिया का अंग नहीं हो सकता।

मूर अपने इस निष्कर्ष की और पुष्टि करने के लिए कुछ अन्य तर्क प्रस्तुत करते हुए कहते हैं कि यदि यह निष्कर्ष अस्वीकार कर दिया जाता है तो बड़ी ही अतार्किक व विचित्र स्थिति उत्पन्न हो जाती है। यदि ज्ञान का विषय ज्ञान की प्रक्रिया से बाह्य कोई अन्य पदार्थ नहीं है तो स्वयं

सुगम पास-बुक
AN EASY APPROACH TO GET SUCCESS

GRB BOOKS

Notes!

ज्ञान व आत्मा के अनात्म अस्तित्व
की व्याख्या नहीं की जा सकती क्योंकि
ज्ञान के बिना ज्ञान का अस्तित्व / अस्तित्व
नहीं ज्ञाता का धारणा और ज्ञान भी
ज्ञाता के बिना आत्मा का अस्तित्व
भी अस्वीकार्य है। और यदि पदार्थ के
स्वतंत्र अस्तित्व को प्रत्ययवादी
अस्वीकार करते हैं, तो वे अनुभववादी
सिद्धान्त का प्रतिपादन करते हैं क्योंकि
मूर द्वारा प्रमाणित उपर्युक्त
निष्कर्ष के आधार पर स्वयं अपनी
ही आधारभूत मान्यताओं को समाप्त
कर देते हैं। यदि प्रत्ययवादी
इस निष्कर्ष से परे हटकर आत्मा
व ज्ञान के स्वतंत्र अस्तित्व को भी
स्वीकार करना पड़ेगा। अतः इस
मान्यता को अमान्य नहीं घोषित किया
जा सकता कि ज्ञान से पृथक व स्वतंत्र
पदार्थों का अस्तित्व है।

अतः बर्कले द्वारा प्रस्तुत
यह मान्यता स्वीकार नहीं की जा
सकती है कि मैं जिस वस्तु का
अनुभव करता हूँ वह स्वयं मेरा
विचार या संवेदन है। मूर का कथन
है कि मुझे भौतिक पदार्थों की उसी
प्रकार साक्षात अनुभूति होती है जिस
प्रकार अपने संवेदनों की। अतः
पदार्थ का अस्तित्व अनुभव से पृथक
होता है। यदि हम पदार्थ व अनुभव
को एक मानते हैं तो इसको सिद्ध
करने का हमारे पास
कोई प्रमाण नहीं है
जबकि इसके विपरीत ज्ञान

सुगम पास-बुक
AN EASY APPROACH TO GET SUCCESS

GRB BOOKS
Notes

द्वारा उद्धव ने [illegible] पद्धति
गोपियों का ही प्रेम [illegible] समान रूप
से प्रमाणित होता है।

इसप्रकार सूर अपनी
सशक्त भाषा, सजीव तर्क, ज्ञानिक
विश्लेषण और अनुभव तार्किक
शैली द्वारा भ्रमरगीतों के माध्यम
निर्गुण के आगमन में निर्गुण
ब्रह्म का खंडन समुचित रूप से
कर सके हैं कि निर्गुण का मा
ज्ञान का स्वरूप आध्यात्मिक
है।

इसप्रकार सूर प्रत्ययवाद
का खंडन करते हैं।

सुगम पास-बुक
AN EASY APPROACH TO GET SUCCESS